अन्नपूर्णा योजना
7 | जन्मदिन | वैवाहिक वर्षगाँठ | पूर्वज-वार्षिकी

प्रकाशन तिथि : 09 अक्टूबर, 2025
Posted at N.I. Estate P.O. N.D.-28
From 11-10-2025 to 15-10-2025

The Registrar of News Papers for India
R.N.I. DELHIN-2001-3044 Regd.
News Paper "Registered"
- DL(W) 10/2034/2023-25
- U(W)-37/2023-25
Licenced to post without prepayment

धर्मदूत

'धर्म एवं सामाजिक जागृति का अनुपम मासिक पत्र'

प्रेषक : विश्व जागृति मिशन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015

अक्टूबर, 2025 | कार्तिक | सं. 2082 | अंक 291 | मूल्य एक प्रति 5.00 रु. | वार्षिक 50.00 रु. | पृष्ठ 8

दीपावली
21 अक्टूबर, 2025 की
हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिष्ठा में, ____________________

1 अध्यात्म | 2 सम्पादकीय | 3 अम्बर की पाती | 4 समाचार दर्शन | 5 गुरु घर से पाती | 6 धर्मादा | 7 समाचार दर्शन | 8 समाचार दर्शन

आत्मा का परमात्मा से मिलाप है ध्यान

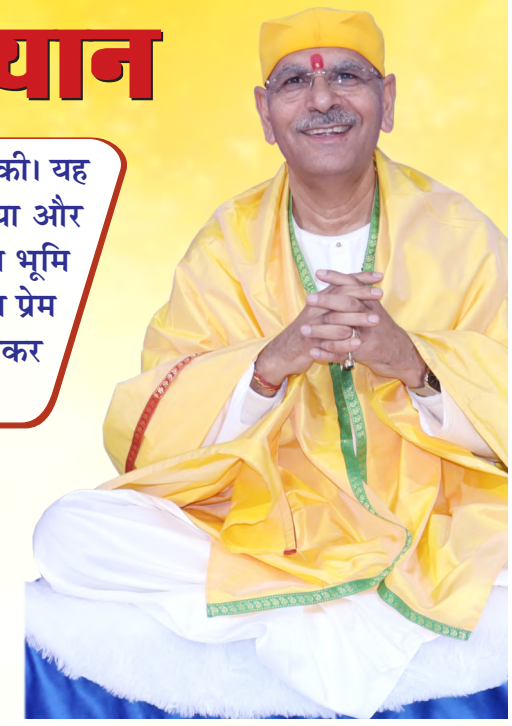

वृंदावन वह दिव्य तीर्थ है जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अपनी बाल लीलाएं की। यह वही भूमि है जहां उन्होंने गोपियों के साथ रासलीला रचाई, माखन चुराया और अपनी बांसुरी से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को मोहित किया। यह राधा कृष्ण की प्रेम भूमि है। यहां का हर कण, हर क्षण, हर वृक्ष-लताएं, गली, भवन और पथ कृष्ण प्रेम से भरा है। आइये! वृंदावन की प्रेम भूमि में ध्यान की गहराइयों में उतरकर अपने अंत:करण में भगवान श्री राधा कृष्ण की प्रेमानुभूति करें।

परब्रह्म को पाना है तो संसार के कोलाहल से दूर रहकर अन्त:करण में अपने चित्त को नियंत्रित करें। प्रभु की आराधना में बैठें तो निरन्तरता रहनी चाहिये, प्रवाह टूटना नहीं चाहिये। परमात्मा की तरफ चलने की इच्छा हो तो सदैव अपने को साधना में निमग्न रखें। ध्यान के समय कोई विचार, प्रार्थना या कामना मन में न रहे। मन की लहर को साक्षीभाव से देखना शुरू कर दें। संसार के मान और अपमान के बीच जब आप संतुलन बना लें तो उसे पाने का मार्ग दिखने लगता है।

साधना का स्थान एकान्त हो। बाहर की आवाज शांत हो जायेगी तभी अंदर की आवाज सुनायी पड़ेगी। ऊंचाई प्राप्त करने के लिये दृढ़ संकल्प हो और अपने अंदर विनम्रता होनी चाहिये। सुधार के लिये दृढ़ संकल्प और अन्त:करण प्रायश्चित के आंसुओं से साफ किया हुआ होना चाहिये। कठिन समय आने पर धैर्य रखें—यह वक्त भी अवश्य गुजर जायेगा, यह समय भी बीत जायेगा—इस वाक्य को सामने रखने से, चिन्तन करने से धीरज मिलेगा। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ध्यानयोग का उपदेश करते हुए यह बताया कि आत्मजागरण और गहराई में उतरने के लिए एकान्त बहुत आवश्यक है। भगवान द्वारा दिया गया जो ज्ञान बांटा गया वह तब से लेकर आज तक संसार को मार्ग दिखा रहा है।

ध्यान किस तरह किया जाय—यह बताते हुए भगवान कहते हैं कि मन को इच्छारहित तथा अन्त:करण और शरीर को वश में रखकर एकान्त में स्थित होकर मन को परमात्मा में लगायें। शुद्ध भूमि पर कुशा, मृगचर्म या वस्त्र का आसन बिछाकर बैठें जो न तो अत्यन्त ऊंचा हो और न ही नीचा हो; ऐसे आसन पर बैठकर अन्त:करण की शुद्धि के लिए योग का अभ्यास करें। ध्यान की अवस्था में बैठते समय शरीर को सीधा रखें। गरदन, सिर, पीठ एक सीध में रहें और नासिका के अगले भाग पर दृष्टि को स्थिर रखें। आसन पर बैठने के बाद शरीर, सांसारिक भोग, मान, बड़ाई, यश-प्रतिष्ठा आदि की कामना न रखकर ईश चिन्तन करते हुए शुद्ध सात्विक ढंग से जीवन का निर्वाह करना ही अन्त:करण की शुद्धि है।

ध्यानयोग के साधक का आहार, निद्रा संतुलित हो। न तो बहुत अधिक खाने वाला हो और न ही बिल्कुल न खाने वाला ही हो, जिसका ज्यादा सोने का स्वभाव होता है उसका योग सिद्ध नहीं होता। सोना इतनी मात्रा में हो कि जिससे जगने के समय आलस्य न सताये। उचित आहार, विहार करने वाले ध्यान-साधक का योग सिद्ध हो जाता है। साधना के द्वारा वश में किया हुआ चित्त जिस काल में अपने स्वरूप में स्थित हो जाता है और पदार्थों से उदासीन हो जाता है; वह योगी कहा जाता है।

योगी के चित्त की स्थिति ऐसी हो जाती है जैसे वायुरहित स्थान में रखी हुई दीपक की लौ थोड़ी भी हिलती-डुलती नहीं, वैसे ही साधक का मन भी सांसारिक पदार्थों से अविचलित रहता है। साधक अपने अन्त:करण में चित्त को रमाये हुए दीपक की लौ की भांति जरा भी विचलित नहीं होता। योगी अपनी सभी कामनाओं का त्याग कर देता है। कामनाओं के त्याग से मन शुद्ध और निश्चल हो जाता है। निश्छल मन में उस परमात्मा का अश्क दिखने लगता है। और ऐसे व्यक्ति को हर जगह ईश्वर की अनुभूति होती है।

भगवान ने अर्जुन से कहा कि जो व्यक्ति, सब प्राणिमात्र में मुझे देखता है और मुझमें सबको देख रहा है—उसके लिए सारा ब्रह्माण्ड मुझमें है और मैं सारे ब्रह्माण्ड में हूं। ●

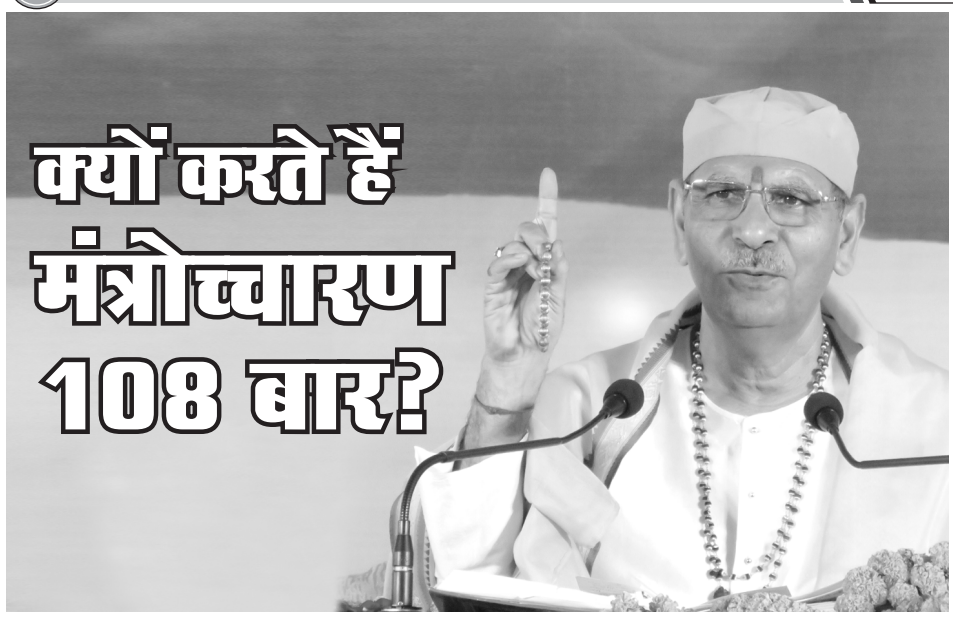

क्यों करते हैं मंत्रोच्चारण 108 बार?

माला में 108 मनके होते हैं। पाठ करने वाला व्यक्ति इस माला के सहारे 108 बार मंत्रोच्चारण करता है एक अनुभूति में। हिन्दू धर्म में यह आकस्मिक नहीं, इसके पीछे वैज्ञानिक चिंतन है। भारत के प्राचीन ऋषि केवल रहस्यवादी ही नहीं थे, अपितु उनका गणित का ज्ञान भी वैज्ञानिक था। हजारों साल पहले उन्होंने बिना किसी आधुनिक उपकरण के अनुपातों को रिकार्ड किया, जिनका वर्णन हमें शास्त्रों में मिलता है। ब्रह्माण्ड के अध्ययन में ऋषियों ने आश्चर्यजनक खोजें की।

पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी सूर्य के व्यास से लगभग 108 गुणा है और पृथ्वी और चन्द्रमा के बीच की दूरी चन्द्रमा के व्यास से 108 गुणा है। सूर्य का व्यास, पृथ्वी के व्यास से लगभग 108 गुणा है। मानव शरीर में 108 ऊर्जा रेखाएं हैं, जिन्हें नाड़ी कहा जाता है, वह शरीर के हृदय चक्र में मिलती हैं। यही कारण है कि योग में पवित्र संक्रमण के दौरान 108 बार सूर्य नमस्कार का अभ्यास किया जाता है। और जब आप माला में किसी मंत्र का 108 बार जाप करते हैं, तो यह हमारी आत्मा में बस जाता है। वैदिक ज्ञान के मुकुट उपनिषद भी 108 हैं। नृत्यशैली भारत नाट्यम के 108 करण हैं, जो दिव्य नृत्य चालें हैं।

आयुर्वेद में 108 मर्म बिन्दु हैं जो उपचार में सहायक हैं। ज्योतिष शास्त्र में 12 राशियां और 9 ग्रह हैं, जिनका गुणा 108 होता है। श्रीयन्त्र में भी 108 अभिसरण बिन्दु हैं। ऋषियों ने स्वीकार किया कि यह संख्याएं केवल गिनती के लिए नहीं हैं, अपितु चेतना की साधक है। 108 पूर्णता की संख्या है। यह स्थूल और सूक्ष्म, ब्रह्मांडीय और कोशकीय के मिलन की प्रतीक है। जब आप 108 बार जप करते हैं तो आप अपनी आन्तरिक प्रवृत्ति को ब्रह्माण्ड की आवृत्ति के साथ जोड़ लेते हैं। आप अपनी आत्मा को सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी के साथ मिला रहे होते हैं, आप स्वयं को केन्द्र के साथ मिलकर ब्रह्माण्डीय ऊर्जा ग्रहण कर रहे होते हैं। इसी विज्ञान के आधार पर सद्गुरुदेव जी महाराज आत्मचेतना के लिए गुरुमंत्र या किसी अन्य मंत्र की कम से कम पांच माला का जप करने का उपदेश देते हैं।

-डॉ. नरेन्द्र मदान

पारसमणि है संतों का सत्संग

हज़ार काम छोड़कर भी सत्संग में जरूर आओ। महापुरुषों का सत्संग पारस पत्थर के समान जीवन को कुंदन बना देता है, अविद्या के अंधेरे से निकालकर विद्या के स्वर्णिम प्रकाश में पहुंचा देता है। जीवन की सार्थकता और उपयोगिता का ज्ञान करा देता है। कुविचारों के बैरियर से मन अच्छे कार्यों की तरफ नहीं बढ़ पाता। गुण, कर्म और स्वभाव में उत्कृष्टता और आदर्शवादिता का अधिकाधिक समावेश होने से मानव में इस संसार को, भगवान के इस विराट रूप को और अधिक विकसित करने की इच्छा होती है। सत्संग से लोक मंगल, परमार्थ प्रयोजन, समाज में फैले अज्ञान, अनाचार और पिछड़ेपन को दूर करने के लिए वह अपनी क्षमता और प्रतिभा का भरपूर प्रयोग करने लगता है। ●

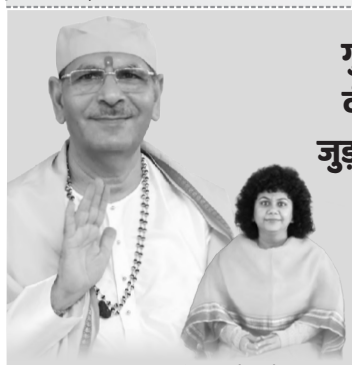

गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के विचार सुनने व विश्व जागृति मिशन से जुड़ने और दूसरों को जोड़ने के लिए सोशल मीडिया के निम्नलिखित प्लेटफार्म पर सम्पर्क करें-

TO CONTACT US : LOG-IN

VISHWA JAGRITI MISSION
Facebook Youtube Instagram X Linked In Whatsapp

HIS HOLINESS SUDHANSHU JI MAHARAJ
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

DR. ARCHIKA DIDI JI
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

दूरदर्शन पर देखिये गीता ज्ञान अमृतम्
DD NATIONAL
प्रतिदिन प्रात: 7:00 से
Tata Sky - 197
Airtel - 153
Dish TV - 113
Tata Play - 114 in SD
Jio TV, Watcho and Waves OTT

संस्कार
सोमवार से शुक्रवार
प्रतिदिन प्रात: 7:45 से 8:05 तक

Phone +91 99999 04747
www.sudhanshujimaharaj.net
www.vishwajagritimission.org
www.drarchikadidi.com
info@sudhanshujimaharaj.net
info@vishwajagritimission.org

Jaago with Sudhanshu ji Maharaj

सद्गुरुदेव उवाच

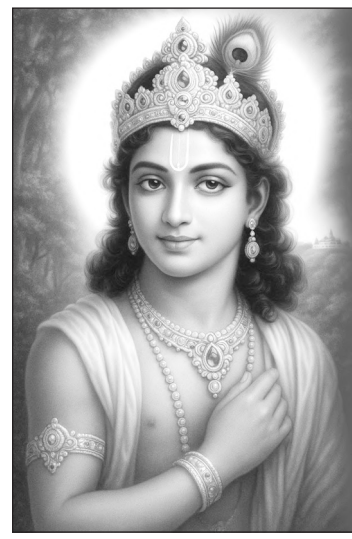

प्रभु के मेल से मिटता है 99 का फेर

हम जिन्दगी भर 99 मिलने के बाद भी एक के फेर में पड़े रहते हैं, 99 मिलने की खुशी नहीं मनाते, जो एक नहीं मिला, उसकी चिन्ता में खुद को घुलाते रहते हैं। एक और मिल जाए, एक और मिल जाए की चाह में, पूरी उम्र गवां देते हैं, लगातार बढ़ती कामनाएं एवं इच्छाएं ही हमारे दुख का कारण हैं, हमारे अन्दर संतुष्टि का अभाव है, भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, हम जिस क्षेत्र में है, जिस काम में हैं, उसी जगह रहकर पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा से भगवान का काम मानकर अपना कर्तव्य करें, अपना हर काम भगवान को निमित्त मानकर करें, ऐसा करने से हमें कर्म वचन बन्धन नहीं लगेगा, अपना काम भी करते रहें, और मेरा स्मरण भी करते रहें, हम यह मानकर चलें कि हमको जो भी काम सौपा गया है, वह प्रभु का काम है। आप जीरो, फिर जीरो, फिर जीरो लिखते रहें फिर उनको जोड़ो नतीजा जीरो ही आएगा, इसी प्रकार यदि हम अपने दिल में एक को यानि भगवान को बिठा लेंगे तो इस शून्य रूपी जीवन की कीमत अनमोल हो जाएगी। हमारा मान, सम्मान, धन-दौलत, परिवार हमारे द्वारा किए कामों का मान बढ़ जाएगा। हमें चाहिए हम अपने दिल में उस परम पिता परमेश्वर का स्थान बनाएं, एक उसको अपना बनाते ही सारा जग अपना हो जाएगा। जिस एक को अपना बनाने से ही सारा कुछ मिल जाए तो फिर दूसरे की आवश्यकता कहां है। ●

गुरुवर के अनमोल वचन

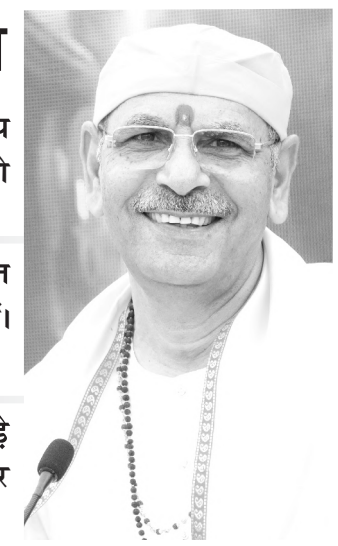

निरंतर मुस्कुराइये- परिस्थिति कैसी भी हो आप अपने होठों से मुस्कुराहट को दूर मत होने देना, नहीं तो सारी जिंदगी रोते बीत जायेगी।

समय प्रबंधन- आप अपनी दिनचर्या को नियमित करें। प्राथमिक और जरूरी कार्य का समय निश्चित करें। हर कार्य को समय से पूरा करने की आदत बनायें।

जीवन का बड़ा लक्ष्य चुनें- जीवन में हमेशा बड़े लक्ष्य चुनें, उन्हें प्राप्त करने के लिए योजना बनायें और पूरी शक्ति से लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्न करें।

दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलें- आपके अंदर की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है, उस शक्ति को भूलो नहीं। इंसान का मन ऐसा है जो असम्भव को भी सम्भव बना सकता है। आप स्वयं अपने स्वामी हैं तो भय, निराशा, दु:ख कुछ नहीं है। ऐसा कोई दुर्भाग्य नहीं जिसे आप तोड़ नहीं सकते। गुरु के अमृत वचनों को जीवन में धारण करके दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने के लिए उठखड़े हों।

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित

भक्ति सत्संग के आगामी कार्यक्रम, 2025

21 अक्टूबर	- दीपावली पूजन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, नई दिल्ली
23 अक्टूबर	- भैयादूज, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, नई दिल्ली
30 अक्टूबर से 02 नवम्बर	- सनातन संस्कृति जागरण अभियान, पंचकुला, हरियाणा (प्रख्यात पूज्य साधु-संत एवं राष्ट्र के प्रखर राजनेताओं के सम्बोधन)
12 से 16 नवम्बर	- श्रीकृष्ण ध्यान-योग, वृन्दावन, उत्तर प्रदेश
27 से 30 नवम्बर	- विराट भक्ति सत्संग, बरनाला, पंजाब
04 से 07 दिसम्बर	- रायपुर, छत्तीसगढ़
19 से 21 दिसम्बर	- कोलकाता, पश्चिम बंगाल
25 से 28 दिसम्बर	- सूरत, गुजरात

आयोजक : विश्व जागृति मिशन

प्रिय आत्मन्!

सारी दुनिया आपका धन वैभव चाहती है लेकिन दुनिया का मालिक आपका मन चाहता है। ईश्वर एक है लेकिन उसके नाम अनेक हैं। झोली फैलाने वाले आपको कई मिलेंगे, लेकिन झोली भरने वाला एक ही मिलेगा। भगवान हमें दिखाई नहीं देता लेकिन उसकी कृपा से हर किसी की झोली भरी दिखाई देती है। जो ईश्वर पर विश्वास करता है उस पर उसकी कृपा जरूर होती है। अपनी चिंताओं को ईश्वर पर छोड़कर उसी का चिंतन कीजिये। ईश्वर की कृपा से आपकी हर चिंता दूर हो जायेगी और चित्त शांत हो जायेगा। आप जिस चीज पर ज्यादा ध्यान दोगे वही चीज आपको मिलने लगेगी। आप अपना ज्यादा ध्यान चिंता, कायरता, निराशा पर रखोगे तो आपको यही चीजें मिलेंगे। इसलिये अपनी सोच को सकारात्मक बनाओ, अच्छा सोचो और अच्छा करो। आप खुद के लिये समय निकालिये, विचार शक्ति को समृद्ध कीजिये, अंधेरों से उजालों की ओर बढ़ने का सतत प्रयास कीजिये। निरंतर प्रयास से आप वह पा जायेंगे जो पाना चाहते हैं और आप वह बन जाएंगे जो बनाना चाहते हैं। भगवान करे ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा भक्ति निरंतर बढ़े और प्रभु कृपा से आपकी हर शुभ मनोकामना पूर्ण हो।

बहुत-बहुत आशीर्वाद, शुभ मंगल कामनाएं।

–आचार्य सुधांशु

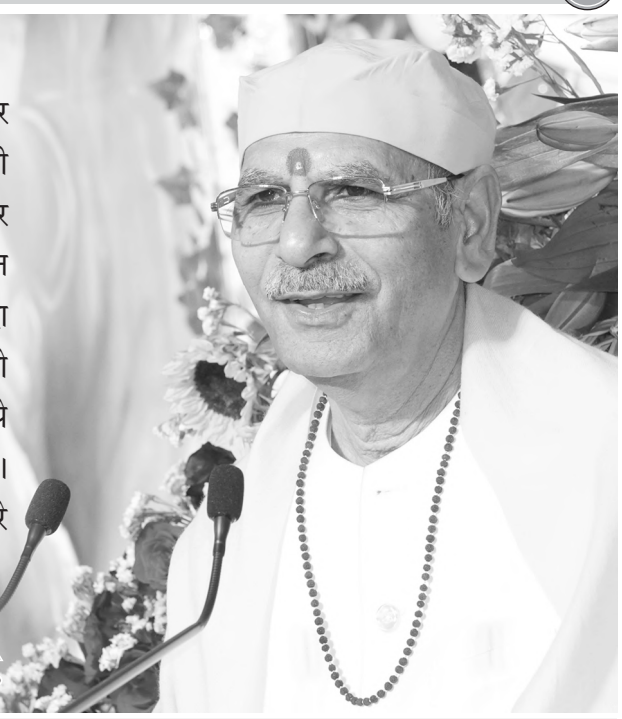

धर्मकोष सदस्यता अभियान

एक बार दान, अनंतकाल तक पुण्य का वरदान

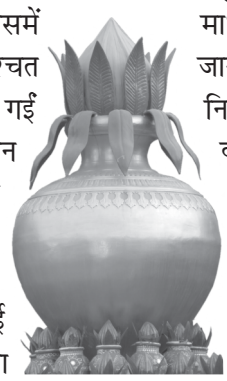

धर्मकोष एक ऐसा कोष है जिसमें दानदाता एक बार में एक निश्चित धनराशि संस्था द्वारा चलाई गईं विभिन्न सेवाओं के लिये दान करेगा, वह राशि दानदाता अपनी सुविधानुसार चार किश्तों में भी दे सकता है। दानदाता से प्राप्त सहयोग राशि को बैंक में स्थाई रूप से जमा कर दिया जायेगा और उस राशि से प्राप्त ब्याज या अन्य माध्यमों से प्राप्त आय द्वारा विश्व जागृति मिशन की विभिन्न सेवाएं निरन्तर संचालित रहेंगी। धर्मकोष में दी गई यह धन राशि ठीक वैसे ही है जैसे एक बार आम का पेड़ लगाओ और जिन्दगी भर उसके फल खाओ। अर्थात् धर्मकोष में एक बार दान दो और उस दान की अर्जित राशि से वर्षों-वर्षों तक दान देने का पुण्य लाभ पाओ।

धर्मकोष दानदाताओं के लिए आनन्दधाम में होता है

नित्य यज्ञ, पूजा, प्रार्थना एवं आरती

मिशन द्वारा संचालित सेवाकार्यों और भक्तों के अनन्तकाल तक पुण्य प्राप्ति के लिए एक **''धर्मकोष''** बनाया गया है। इस धर्मकोष में दान देने वाले भक्त के नाम के साथ उसकी वंशावली का नाम एक कालपात्र में स्वर्णाक्षरों में अंकित कर उसे द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रांगण में स्थापित किया गया, जो कि सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रहेगा और दानदाता के आनेवाली पीढ़ियां अपने पूर्वजों पर गर्व करेंगी। धर्मकोष के दान-दाताओं की वंशावली शिव वरदान तीर्थ में स्थापित हैं, जहां पर नित्य सायंकालीन यज्ञ, आरती में गुरुकुल के ऋषिकुमारों द्वारा धर्मकोष के दानदाताओं के लिए यज्ञ में आहुतियां दी जाती हैं तथा उनके लिए प्रार्थना व मंगलकामना भी की जाती है।।

धर्मकोष में आप यह सहयोग सीधे बैंक एकाउण्ट में भी जमा कर सकते हैं। जमा करने के उपरान्त श्री ललित कुमार जी को फोन नम्बर - 9312284390 पर अवश्य सूचित करें ताकि दिये गये दान की रसीद आपको भेज सकें।

Name of Account : VISHWA JAGRITI MISSION
Account number : 235401001600
IFSC : ICIC0002354
Name of Bank : ICICI Bank
Address of Branch : Shop Number 3, Nazafgarh Road,
Nangloi, New Delhi - 110041

शिव वरदान तीर्थ

वह स्थान जहां पूर्ण होती हैं मनोकामनाएं
विश्व विख्यात संतों ने किया यहां दर्शन-पूजन

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग

इस अंक में हम बात कर रहे हैं आनन्दधाम आश्रम स्थित शिव वरदान तीर्थ में तृतीय ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर की। जहाँ-जहाँ शिव ज्योतिरूप में प्रगटे वे स्थान भारत भर में ज्योतिर्लिंग कहलाये, उनकी मान्यता जगत प्रसिद्ध है, उन्ही का साक्षात्स्वरूप आनन्दधाम ओंकार पर्वत की गुफा में 12 ज्योतिर्लिंगों में विद्यमान हैं। यहाँ शिव की दिव्य उर्जा कष्ट हरण करती है। इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन पूजन और रुद्राभिषेक से हजारों भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं। देश विदेश के भक्त यहाँ मनौती पूर्ण करने आते हैं। भारत के महान संतों ने भी यहाँ आकर दर्शन पूजन किया है और कृपा प्राप्त कर आनन्दित हुए हैं। पूज्य जगद्गुरु स्वामी राजराजेश्वराश्रम जी महाराज (हरिद्वार), विश्व प्रसिद्ध राम कथा वाचक पूज्य मोरारी बापू जी, चमत्कारी विद्या के धनी सनातन गौरव बागेश्वर सरकार पूज्य पंडित धीरेन्द्र शास्त्री जी तथा भारत भर के सैकड़ों साधु सन्यासी एवं भक्तजन यहाँ की दिव्य ऊर्जा से लाभान्वित हुए।

शिव वरदान तीर्थ के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक विशेष ज्योतिर्लिंग है 'महाकालेश्वर'। जिनके दर्शन करने से मृत्यु का भय दूर होता है, दीर्घायु का वरदान मिलता है और अकाल मृत्यु से मुक्ति मिलती है। इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन-पूजन से भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक प्रगति व मनचाही मनोकामनाएं पूरी होती हैं। कालों के काल 'महाकाल' को समय के स्वामी और कालों के देवता के रूप में पूजा जाता है। यदि आपके घर-परिवार में किसी सदस्य को कोई रोग-बीमारी है और काफी प्रयास के बाद भी उस बीमारी से छुटकारा नहीं मिल पा रहा है तो आप यहां के महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें और भगवान मृत्युंजय महाकाल से शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना करें। भगवान महाकाल की कृपा से रोगी व्यक्ति पर दवाओं, औषधियों का अच्छा प्रभाव पड़ेगा और भगवान शिव की कृपा से वह शीघ्र स्वस्थ होने लगेगा। यहां के दर्शन-पूजन और मंत्र जाप से अनेकानेक भक्तों को स्वास्थ्य लाभ हुआ है। ●

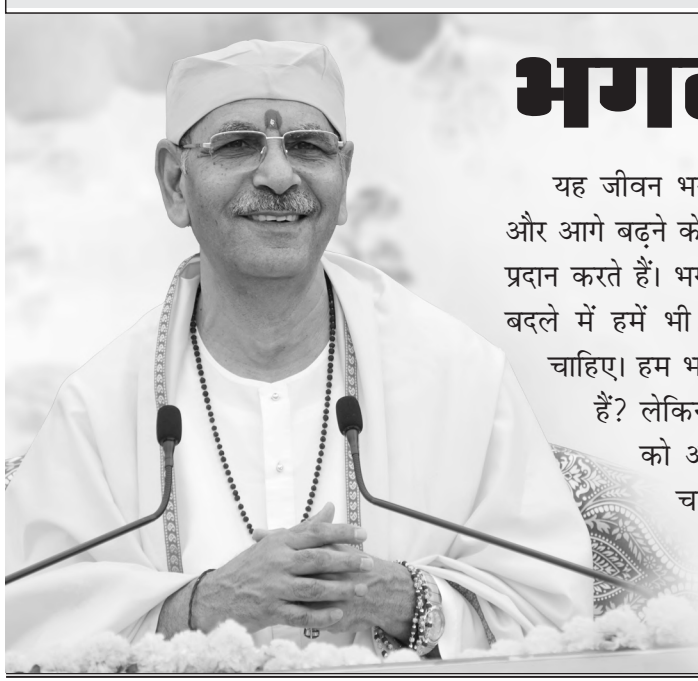

भगवान को प्रिय हैं भले इंसान

यह जीवन भगवान का दिया हुआ है और आगे बढ़ने के अवसर भी भगवान ही प्रदान करते हैं। भगवान जो हमको देते हैं, बदले में हमें भी कुछ भगवान को देना चाहिए। हम भगवान को क्या दे सकते हैं? लेकिन फिर भी हमें भगवान को अपना मन दान कर देना चाहिए। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि-'तुम मुझे अपना मन दे दो', जीवन का कोई भरोसा नहीं है, कब क्या हो जाए, कोई नहीं जानता, इसलिए भगवान द्वारा दी गयी प्रत्येक वस्तु के लिए भगवान का धन्यवाद करना मत भूलो। दिन की शुरूआत भगवान के प्रार्थना से और रात में सोने से पहले भगवान का चिन्तन करो। इससे हमारी सोच भगवानमय हो जाती है और हर चीज के प्रति हमारी करुणा जाग जाती है। दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं एक देव, दूसरे दैत्य प्रवृत्ति के, दैत्यों का काम होता है, बनते कामों में विघ्न डालना, संयोग को वियोग में बदलना, खुशी को दुख में बदलना, जोड़ने को तोड़ना, हंसाते को रुलाना और देव लोगों का काम है, रुलाते को हंसाना, बिगड़े को बनाना, डूबते को बचाना, बिगड़ों को सही राह दिखाना, बिखरों को जोड़ना। अच्छे लोग वह काम चुनते हैं, जिससे अपनी भी जीविका चले, परिवार पले, और दूसरों का भी भला हो, जिसका मन सुन्दर होगा, उसका शरीर भी सुन्दर होगा, उसके द्वारा किए काम भी सुन्दर होंगे, वह सबका प्रिय होगा। ●

फिलीपीन्स मनीला में तीन दिवसीय विराट भक्ति सत्संग सम्पन्न

सफलता के द्वार खोलती है सद्गुरु की कृपा - सुधांशु जी महाराज

फिलीपींस मनीला। विश्व जागृति मिशन के संस्थापक पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज जी के पावन सान्निध्य में फिलीपींस मनीला में 19 सितंबर 2025 से 21 सितंबर 2025 तक विराट भक्ति सत्संग का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मंडल प्रधान श्री लाल केसवानी, श्री प्रकाश चंदनानी, श्री हरेश मेहतानी, श्री सन्नी करमचंदानी, श्री फ्रेंकी गंगवानी, श्री केनी परयानी आदि अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पूज्य महाराज श्री को सुनने के लिए भारी संख्या में प्रवासी भारतीय भक्त जन उपस्थित हुए। पूज्य गुरुदेव के स्वागत में बाल कलाकारों के द्वारा मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति की गई।

इस अवसर पर भक्तों को संबोधित करते हुए पूज्य महाराज श्री ने कहा–समस्त भारतवासियों को अपनी सनातन संस्कृति की गौरवशाली परंपरा पर गर्व करना चाहिए। सनातन संस्कृति में जीवित माता-पिता के सम्मान के साथ अमृत पितरों के प्रति भी आदर प्रकट करने के लिए ऋषियों ने श्राद्ध की परंपरा दी है। संतान के लिए माता-पिता के त्याग का ऋण चुकाना असंभव है इसलिए माता- पिता का ध्यान रखना, उनकी भावनाओं का सम्मान करना हमारा परम कर्तव्य है। संसार प्रेम से ही चलता है। समस्त रिश्ते प्रेम के धागे से ही जुड़े होते हैं। माता-पिता के लिए वही प्रेम आदर, पति-पत्नी में प्रणय, भाई बहन में स्नेह सद्गुरु के प्रति श्रद्धा एवं ईश्वर के प्रति भक्ति का रूप ले लेता है।

पूज्य श्री ने अपने संदेश में आगे कहा– अपने बच्चों को संस्कारवान बनाएं उन्हें महिलाओं का, बड़ों का सम्मान करना सिखाए। समस्याओं का सामना करना सिखाएं। बुद्धिमत्ता पूर्वक की गई मेहनत सद्गुरु एवं परमात्मा की कृपा जीवन में सफलता का द्वार खोलते हैं। भगवान से चेहरे पर सदैव रहने वाली मुस्कुराहट मांगे। अपने सद्गुरु से सद्बुद्धि, घर में बरकत एवं ग्रहों की अनुकूलता की प्रार्थना करें। गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र का जाप, अनुशासित जीवन, सुविचारित योजना, कुशल प्रबंधन, सकारात्मक विचार आपको आंतरिक रूप से सबल बनाते हैं, सफल बनाते हैं। ●

सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज का हांगकांग में दिव्य भक्ति सत्संग सम्पन्न

आंतरिक शक्तियों के जागरण के लिए करें नवदुर्गा शक्ति की उपासना - सुधांशु जी महाराज

हांगकांग। विश्व जागृति मिशन हांगकांग चैप्टर के तत्वावधान में दिनांक 23 सितंबर 2025 से 25 सितंबर 2025 तक 3 दिन का दिव्य भक्ति सत्संग पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। सत्संग आयोजन समिति के वरिष्ठ अधिकारी गण श्री नोतन तोलानी, श्री प्रकाश सुजनानी, श्री रमाकांत अग्रवाल, श्री हरेश मोहिनानी, श्री विनोद बावानी, श्री बेनी रतनानी आदि ने विमानतल पर पहुंच कर पूज्य श्री का स्वागत कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

हॉलिडे इन् होटल के सभागार में उपस्थित श्रद्धालु भक्तों को संबोधित करते हुए पूज्य महाराज श्री ने कहा–हर व्यक्ति संपूर्ण ब्रह्मांड से जुड़ा है। ब्रह्मांड के मस्तिष्क से संपूर्ण सृष्टि का संचालन होता है। प्रकृति में होने वाले परिवर्तन का असर हमारे मन मस्तिष्क पर पड़ता है। जब हम ब्राह्मणी शक्ति या परमात्मा की कृपा से जुड़ते हैं तब हमारी आंतरिक शक्तियां कई गुना अधिक बढ़ने लगती है। शरीर में जहां से रीढ शुरू होती है वहां हमारी कुंडलिनी शक्ति सुप्त अवस्था में स्थित रहती है

अपने मूलाधार केंद्र में माता शैलपुत्री के स्वरूप का ध्यान करें। उनकी कृपा से स्थिरता और आरोग्य की प्राप्ति होती है। स्वाधिष्ठान चक्र में ब्रह्मचारिणी स्वरूप माता की उपासना करें। उनकी कृपा से नियंत्रण की शक्ति, संयम की शक्ति जागृत होती है। मणिपुर चक्र में माता चंद्रघंटा के स्वरूप की उपासना करें। इससे दुख पीड़ा से मुक्ति संकट से मुक्ति मिलती है। अनाहत चक्र में कुष्मांडा माता का स्वरूप ध्यान करें। उनकी कृपा से हृदय का प्रेम सफलता यश कीर्ति प्रबंधन आदि शक्ति जागृत होती है। विशुद्धि चक्र में स्कंदमाता का स्वरूप ध्यान करें उनकी कृपा से लोक व्यवहार की शक्ति जागृत होती है। आज्ञा चक्र में माता कात्यायनी के स्वरूप का ध्यान करें। इनके आशीर्वाद से सौभाग्य जागृत होता है विवेक जागृत होता है बिंदु चक्र में माता कालरात्रि एवं महागौरी का ध्यान करें इनकी कृपा से सुख शांति समृद्धि की प्राप्ति होती है। सहस्त्रार चक्र में माता सिद्धिदात्री का ध्यान करें। इस तरह माता का ध्यान और उपासना करने से आपके सभी दु:ख, क्लेश आदि दूर होंगे। जीवन में सुख और शांति आयेगी। ●

आनंदधाम आश्रम में सम्पन्न हुआ नेशनल मेडिकल आर्गेनाइजेशन का सेमिनार

आनंदधाम आश्रम के व्यास सभागार में दो दिवसीय नेशनल मेडिकल आर्गेनाइजेशन सेमिनार का शुभारम्भ विश्व जागृति मिशन के उपाध्यक्षा एवं योग गुरु डॉ अर्चिका दीदी जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस अवसर पर कई सीनियर डॉक्टर्स मौजूद रहे। सेमिनार में शामिल हुए डॉक्टरों को सम्बोधित करते हुए पूज्या अर्चिका दीदी जी ने कहा कि आप सभी बड़े ही सौभाग्यशाली हैं कि आपको मेडिकल की पढ़ाई के दौरान अभ्यास वर्ग कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने डॉक्टर्स की युवा शक्ति को देश की शक्ति बताकर उनका उत्साहवर्धन किया और देश के विकास के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी और सभी डॉक्टरों को परमात्मा का दूसरा रूप बताते हुए सभी को अपनी शुभकामनाएं दीं और उनके उज्जवल भविष्य की मंगल कामनाएं की।

सेमिनार के समापन अवसर पर पूज्य महाराजश्री ने उपस्थित डॉक्टर्स विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भगवान के बाद डॉक्टरों को दूसरा जीवन देने के लिए सर्वोच्च स्थान पर रखा है। हमारे भारत की संस्कृति है सभी निरोग और स्वस्थ रहें। देश के युवा कर्णधार अपने जीवन को ऊंचा उठाने के लिए अपने विचार को उत्तम विचार बनाकर कर्म करने वाले बनें और एक नई मिसाल कायम करें। महाराजश्री ने अभ्यास वर्ग कार्यक्रम में आए समस्त विद्यार्थियों के लिए उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए मंगलकामना दी। ●

गुरुदेव में है भगवान राम के साहस की दैवीय सम्पदा

तुलसी साथी विपत्ति के, विद्या विनय विवेक। साहस सुकृत सुसत्यव्रत, राम भरोसो एक।।

रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि विद्या, विनम्रता, विवेक, साहस, अच्छे कार्य, सच बोलने की आदत और भगवान राम पर भरोसा ये सात गुण व्यक्ति का विपत्ति में भी साथ नहीं छोड़ते।

भगवान राम की एक विशेष कला है साहस, जिसमें साहस है समझिये उसे दैवीय संपदा का उपहार मिला है। साहस का मतलब है कठिनाइयों, भय, संकट और चुनौतियों के सामने हार न मानना अपितु दृढ़ निश्चय आत्मविश्वास के साथ हार को भी जीत में बदल देना। साहस केवल शारीरिक शक्ति ही नहीं अपितु मानसिक दृढ़ता और नैतिक बल भी है। भगवान राम ने इसी शक्ति के बल पर विषम से विषम परिस्थिति में भी अपने अंदर के समत्व को बनाए रखा। वे अयोध्या के राजसिंहासन पर आसीन होने का शुभ समाचार पाकर अधीर नहीं हुए और थोड़े ही समय में वनवास का आदेश सुनकर व्याकुल भी नहीं हुए। सुखद और दुखद दोनों परिस्थितियों में सम रहते हुए अयोध्या वासियों के साथ सम्पूर्ण मानवता को अद्भुत साहस का संदेश दिया। यह उनके साहस का ही प्रताप था वे हर स्थिति में आगे बढ़ते रहे, अन्याय का विरोध करते रहे और जहां अपना कोई नहीं था वहां भी अपनी एक विशेष सेना संगठित कर उस समय के सबसे बड़े अन्यायी योद्धा को परास्त कर मानव समाज के समक्ष सत्य, न्याय व सदाचार का एक आदर्श प्रस्तुत किया।

भगवान श्री राम की तरह ही हमारे गुरुवर पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज ने मानव समाज में उभरती दुर्बृत्तियों आडम्बर, अंधविश्वास तथा रुढ़ियों के विरुद्ध लोगों को जागृत करने का साहस दिखाते हुए धर्म के सही मायने क्या हों, मानव जीवन में विशुद्ध धर्म कैसे उतरे, धर्म जागृति लोगों में कैसे आए, सांस्कृतिक जागरण कैसे हो और धर्म के पथ पर चलकर लोग अपना धार्मिक उत्थान कैसे करें? जिससे उनकी आध्यात्मिक उन्नति के साथ भौतिक उत्थान भी हो इसके लिए महाराजश्री ने अपनी सरल-सहज मनोहारी शैली में वेद-उपनिषद्, गीता, रामायण, दर्शन और पौराणिक विवेचन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए ग्राम, नगर, प्रदेश, देश, विदेश की यात्रा की और ऋषियों-मुनियों, सिद्धों, संतों, साधकों, अवतारों की पवित्र वाणी को करोड़ों लोगों तक पहुंचाकर उनके जीवन का रूपान्तरण किया।

प्रयास करें प्रतिदिन गुरु से जुड़े रहें। चाहे टी.वी., सोशल मीडिया, सत्संगों या ध्यान शिविरों के माध्यम से। आपके जीवन में भी गुरु से जुड़ने के पश्चात् निश्चित ही कुछ अप्रत्याशित, आश्चर्यजनक बदलाव आए होंगे, आपत्ति-विपत्ति से बाहर निकले होंगे, तो आप अवश्य हमसे अपने अनुभव साझा कीजिए ताकि आपसे प्रेरित होकर अन्य भक्तों की भी गुरु के प्रति श्रद्धा बढ़े और उन्हें भी आप के जैसा ही गुरु कृपा का लाभ प्राप्त हो सके। आप अपने अनुभव फोटो सहित श्री शिवाकांत द्विवेदी जी (9968613351) सहसम्पादक धर्मदूत को अवश्य भेजें।

क्रमशः ...

आपका अपना
देवराज कटारीया

आनंदधाम आश्रम में मनाई गई नवरात्रि एवं विजयदशमी पर्व

भोगवादी संस्कृति पर त्याग की संस्कृति के विजय का पर्व है विजयदशमी - सुधांशु जी महाराज

आनन्दधाम, नई दिल्ली। नवदुर्गा शक्ति की पूजा आराधना और उपासना का पर्व नवरात्रि 22 सितंबर से 01 अक्टूबर, 2025 तक बड़ी श्रद्धा और भावभक्ति से मनाया गया। आश्रम में नित्य देवी दुर्गा के विविध रूपों का पूजन किया गया। जिसमें भक्तों ने ऑफलाइन एवं ऑनलाइन सहभागिता करके अपनी मनोकामना पूर्ति का पुण्यफल प्राप्त किया।

2 अक्टूबर, 2025 को भगवान श्री राम की विजय यात्रा का महापर्व विजयदशमी पर रात्रि 8 बजे आश्रम में रावण दहन किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल एवं उपदेशक के छात्रों ने राम और रावणी सेना के युद्ध का अद्भुत नाट्य दृश्य प्रस्तुत किया।

विजयदशमी पर गुरुवर ने कहा–यह पर्व भोगवादी संस्कृति पर त्यागवादी संस्कृति की जीत का प्रतीक है। यह आत्मसंयम का दिन है, यह शौर्य का दिन है, उल्लास का दिन है, अच्छे लोगों को एकत्रित होकर एक दूसरे की शक्ति बनकर मानव कल्याण के लिए कार्य करने का दिन

है, यह देवसंस्कृति के विजय का दिन है और इस संस्कृति के परम निधान भगवान श्री राम हैं, हमें उनके आदर्श आचरण को अपने जीवन में उतारने की आज संकल्पना करनी चाहिए। प्रसाद वितरण के साथ विजयदशमी का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ●

चलो! भगवान श्रीकृष्ण की लीलाभूमि वृन्दावन
ध्यान साधना शिविर में भाग लेने का सुनहरा अवसर
आइये, जहां बाल कृष्ण का बचपन बीता वहां ध्यान की यात्रा करें
परम पूज्य सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के दिव्य ज्ञान द्वारा निर्देशित

श्रीकृष्ण ध्यान योग
12 से 16 नवंबर 2025

श्री कृष्ण की नगरी में विशेष कार्यक्रम:
- पूज्यश्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के पावन मार्गदर्शन में ध्यान
- नवीन ध्यान शैलियों से परिचय
- वृन्दावन और आसपास के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण जो अपनी सुंदरता और आध्यात्मिक महत्व के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं।
- सुखद आवास एवं सात्विक भोजन की व्यवस्था

ध्यान स्थली:
भारती उपवन, वैजंती धाम
जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य द्वार के पास,
छटीकरा रोड, वृन्दावन,
उत्तर प्रदेश, 281121

शीघ्र अपना स्थान सुरक्षित करें!

वृन्दावन और आसपास के दर्शनीय स्थल (ध्यान स्थली से उनकी दूरी)
नोटः- रमणीक स्थलों पर भ्रमण करने की व्यवस्था साधकों को स्वयं करनी होगी।
सीमित आवास व्यवस्था

आयोजक: विश्व जागृति मिशन
पंजीकरण व अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : (+91) 9312284390, 9589938938, 9685938938, 8826891955

सेहत का प्राकृतिक उपहार-हरसिंगार

हरसिंगार स्वास्थ्य के लिए प्रकृति का एक अनमोल उपहार है। हरसिंगार के फूलों से लेकर पत्तियां, छाल एवं बीज भी बेहद उपयोगी हैं। यह सेहत के गुणों से भी भरपूर है। इससे सेहत व सौंदर्य के अनेक लाभ मिलते हैं। विभिन्न बीमारियों को दूर कर उत्तम स्वास्थ्य के लिए हानिरहित इस औषधि का लाभ अवश्य लेना चाहिए। यहां पर अनेक तरह की बीमारियों में हरसिंगार के स्वास्थ्य लाभ बताये जा रहे हैं–

जोड़ों में दर्द - हरसिंगार के 6 से 7 पत्ते तोड़कर इन्हें पीस लें। पीसने के बाद इस पेस्ट को पानी में डालकर तब तक उबालें जब तक कि इसकी मात्रा आधी न हो जाए। अब इसे ठंडा करके प्रतिदिन सुबह खाली पेट पिएं। नियमित रूप से इसका सेवन करने से जोड़ों से संबंधित अन्य समस्याएं भी समाप्त हो जाएंगी।

खांसी - कैसी भी खांसी हो हरसिंगार के पत्तों को पानी में उबालकर पीने से ठीक हो जाती है। आप चाहें तो इसे सामान्य चाय में उबालकर पी सकते हैं या फिर पीसकर शहद के साथ भी प्रयोग कर सकते हैं।

बुखार - किसी भी प्रकार के बुखार में हरसिंगार की पत्तियों की चाय पीना बेहद लाभप्रद होता है। डेंगू से लेकर मलेरिया या फिर चिकनगुनिया तक, हर तरह के बुखार को खत्म करने की क्षमता इसमें होती है।

साइटिका - दो कप पानी में हरसिंगार के लगभग 8 से 10 पत्तों को धीमी आंच पर उबालें और आधा रह जाने पर इसे आंच से उतार लें। ठंडा हो जाने पर इसे सुबह-शाम खाली पेट पिएं। एक सप्ताह में आप फर्क महसूस करेंगे।

बवासीर - हरसिंगार को बवासीर या पाइल्स के लिए बेहद उपयोगी औषधि माना गया है। इसके लिए हरसिंगार के बीज का सेवन या फिर उनका लेप बनाकर संबंधित स्थान पर लगाना फायदेमंद है।

त्वचा के लिए - हरसिंगार की पत्तियों को पीसकर लगाने से त्वचा संबंधी समस्याएं समाप्त होती हैं। इसके फूल का पेस्ट बनाकर चेहरे पर लगाने से चेहरा उजला और चमकदार हो जाता है।

हृदय रोग - हृदय रोगों के लिए हरसिंगार का प्रयोग बेहद लाभकारी है। इस के 15 से 20 फूलों या इसके रस का सेवन करना हृदय रोग से बचाने में कारगर है।

दर्द - हाथ-पैरों व मांसपेशियों में दर्द व खिंचाव होने पर हरसिंगार के पत्तों के रस में बराबर मात्रा में अदरक का रस मिलाकर पीने से फायदा होता है।

अस्थमा - सांस संबंधी रोगों में हरसिंगार की छाल का चूर्ण बनाकर पान के पत्ते में डालकर खाने से लाभ होता है। इसका प्रयोग सुबह और शाम को किया जा सकता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता - हरसिंगार के पत्तों का रस या फिर इसकी चाय बनाकर नियमित रूप से पीने पर शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और शरीर हर प्रकार के रोग से लड़ने में सक्षम होता है। इसके अलावा पेट में कीड़े होना, गंजापन, स्त्री रोगों में भी बेहद फायदेमंद है। ●

मन की शांति के साथ कई परेशानियों का समाधान है भ्रामरी प्राणायाम

भ्रामरी प्राणायाम का नाम भौरें की गुंजार पर रखा गया है। यह प्राणायाम व्यक्ति के मन को शांत करता है। भ्रामरी प्राणायाम से क्रोध, चिन्ता और निराशा से राहत मिलती है। यह प्राणायाम गर्मी और सिर दर्द से भी राहत देता है। इससे माइग्रेन और उच्च रक्तचाप भी कंट्रोल होता है। इस प्राणायाम से बुद्धि तेज होती है और आत्म विश्वास बढ़ता है। इसे आप अपनी सुविधानुसार अपने घर, कार्यालय व बगीचे इत्यादि में आसानी से करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ●

'धर्मो रक्षति रक्षितः' धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए धर्मादा से जुड़ें

धर्म शास्त्रों का संदेश है कि व्यक्ति जो भी कमाये उसमें से कुछ अंश धर्म के लिए दान कर अपने धन की शुद्धि करे। क्योंकि कहा गया है–'धर्मो रक्षति रक्षितः' जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। प्राचीन समय में हर व्यक्ति अपनी कमाई में से दसवां भाग ऐसे कार्यों में दान पुण्य करता था। इससे व्यक्ति की आय चाहे भले ही कम रही हो, लेकिन उसकी कमाई में बरकत बनी रहती थी। समय बदला और लोगों की आय भी बढ़ी लेकिन वे धीरे-धीरे दान-पुण्य करना भूलने लगे जिससे उनकी आय में बढ़ोत्तरी होने के बाद भी बरकत में कमी होने लगी। लोगों की आय भी बढ़े और बरकत भी बनी रहे इस उद्देश्य से पूज्य गुरुदेव जी महाराज ने विश्व जागृति मिशन द्वारा भक्तों के कल्याण के लिए धर्मादा सेवाएं प्रारम्भ करवाई हैं। मिशन अनाथाश्रम, गुरुकुल, योगा स्कूल, वृद्धाश्रम, धर्मार्थ अस्पताल, गौशालाएं, भण्डारे, आश्रम एवं मंदिर निर्माण, यज्ञ, सत्संग एवं साधना शिविर तथा दैवीय आपदाओं में सेवा-सहयोग भी करता है। आप इन सेवाकार्यों में दान-पुण्य कर अपने घर-परिवार में सुख-शांति और नौकरी-व्यापार में उन्नति-प्रगति का वरदान पायें।

**इस जीवन का पैसा अगले जन्म में काम नहीं आता,
मगर इस जीवन का पुण्य जन्मों, जन्मों तक काम आता है।**

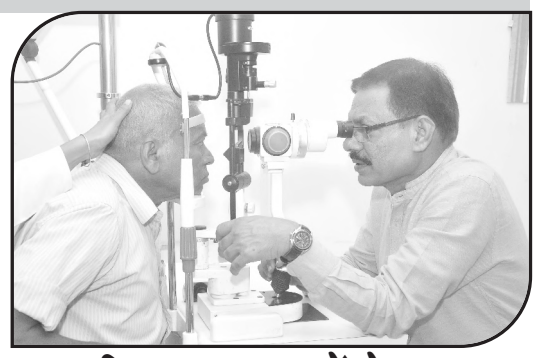

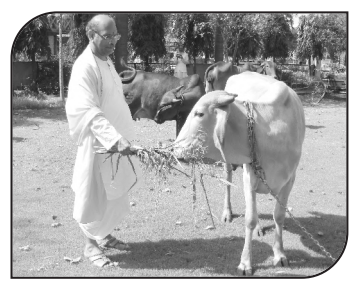

संस्कृति का संवाहक गुरुकुल

करुणासिन्धु अस्पताल में नेत्र उपचार

बालाश्रम (अनाथाश्रम)

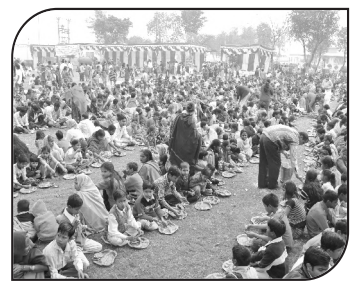

गौशाला में गौग्रास

आनन्दधाम का वृद्धाश्रम

यज्ञ-अग्निहोत्र

दैवीय आपदा सहयोग

आनन्दधाम में भण्डारा

यदि आप अभी तक धर्मादा सदस्य नहीं बने हैं और विश्व जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे सेवा प्रकल्पों से संतुष्ट हैं तो श्री जी.सी. जोशी, दूरभाष-09311534556 पर सम्पर्क करें।

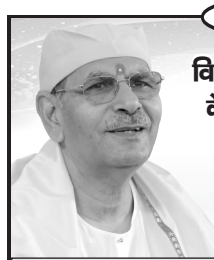

एक सुविधा यह भी

विश्व जागृति मिशन द्वारा संचालित विभिन्न सेवाप्रकल्पों के लिए दान आप पे.टी.एम. एवं अन्य यू.पी.आई. ऐप द्वारा भी कर सकते हैं।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के पश्चात श्री जी.सी. जोशी जी के वाट्सऐप नं॰ 93115 34556 पर अवश्य सूचित करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

मन के हारे हार, मन के जीते जीत

संसार में सब कुछ बदलता है, हम आप बदलते हैं, प्रकृति और प्रवृत्ति बदलती है, हमारा आचार-व्यवहार बदलता है, मौसम बदलता है, शरीर की प्रकृति बदलती है, लेकिन जो कभी नहीं बदलता, वह है, परम पिता परमेश्वर और उसके नियम, उसके सिद्धांत, उसका व्यवहार कभी नहीं बदलता, वह अपने बच्चों से, अपने बनाए इस संसार से बहुत प्यार करता है। वह चाहता है कि मेरे बच्चे सदा मेरे बनाए नियमों और रास्तों पर चलें, मेरी भक्ति करें, तब ही आपका कल्याण होगा, आपको हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी, अगर आप इन नियमों को छोड़ोगे, तो परेशान हो जाओगे, अपने जीवन को सरल बनाने की बजाय जटिल बना लोगे, आनन्द के स्थान पर अशान्ति मिलने लगेगी, फूलों सा सुन्दर जीवन कांटों से बदतर हो जाएगा, इसलिए ईश्वर के बनाए नियमों में बाधक न बनो, बल्कि नियमों का पालन करो।

आप अपनी नकारात्मक विचारधारा को सकारात्मक बनाओ, हार की नहीं हमेशा जीत की कामना करो, हमेशा मन में विश्वास रखो कि हर हालत में मेरी जीत होगी, जब हम इस विचार को लेकर चलेंगे तो निश्चित रूप से हमारी जीत होगी, क्योंकि सब कुछ हमारे मन पर निर्भर है, मन के हारे हार, मन के जीते जीत। कुछ कर दिखाने की जिद् ने ही, हमसे समुद्रों पर पुल बंधवा दिए, आसमानों में हवाई जहाज उड़वा दिए, मंगल ग्रह पर 'मंगलयान' भेजना इसी इच्छा शक्ति का परिणाम है, इसलिए किसी भी कीमत पर अपने संकल्पों को कमजोर मत पड़ने दो। ●

ध्यान से होती है भगवान की अनुभूति

भगवान इस सृष्टि की तरह व्याप्त है, जैसे पानी में मिश्री या नमक की डली घुलने के बाद पता नहीं चलता, परन्तु उसको पीकर, उसके स्वाद से उसको जाना जा सकता है कि वह मीठा है या नमकीन, लेकिन प्रभु के स्वाद कैसे पता चलेगा, उसका एहसास तो उसकी साधना करने उसका ध्यान करने से पता चलेगा, उसका सहारा लेते ही उसकी कृपा, उसका विराट रूप हमको नजर आने लगेगा, तब पता चलेगा कि वह हर पल, हर क्षण हमारे निकट है, हमारे दिल में है, परन्तु हम उसको देख नहीं पाते, उसको देखने के लिए हमें उसकी भक्ति करनी चाहिए। हम अपनी मैं को मिटाएंगे, तब उसको पाएंगे, एक को पाने के लिए एक को मिटाना होगा, जिस तरह बीज मिटता है तब वृक्ष बनता है। प्रभु को पाना है तो, अपने आपको पूरी तरह प्रभु चरणों में समर्पित कर दो, अपना सब कुछ उसको अर्पित कर दो। ●

अवश्य करें गौ सेवा और गौदान

गौ माता भारतीय संस्कृति की प्रतीक हैं। किसी परिस्थिति में यदि जन्मदात्री माँ की मौत हो जाती है तो नवजात शिशु को गौ माता के दुग्ध से नवजीवन दिया जा सकता है। इसलिए माँ के समान ही गौ माता को वंदनीय और पूजनीय माना गया है। गौ माता का न केवल दूध ही उपयोगी है, अपितु दूध से बना दही, घी और यहां तक कि गौमूत्र और गोबर भी अत्यंत उपयोगी है।

मनुष्य के लिए ईश्वर के वरदान के समान पूज्यनीय गौओं का आज निरादर हो रहा है। शहरों के कूड़ेदानों में वह कूड़ा खाकर अपनी भूख शांत करती हुई आवारा घूमती हैं। उनके पालन-पोषण का ज्यादातर लोगों को ख्याल नहीं है। लोग इनका दूध निकालकर उन्हें दर-दर भटकने के लिए छोड़ देते हैं। यह अत्यंत पीड़ादायक है। आइये! माँ के समान उपकारी गौमाता के पालन-पोषण और संरक्षण का संकल्प लें।

कामधेनु गौशाला

गौ माता के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु दान देकर पुण्य के भागीदार बनें।

कृपया गौशाला में दान देने के लिए आप अपनी सहयोग राशि ''विश्व जागृति मिशन-गौशाला'' के एक्सिस बैंक लिमिटेड, A-11, विशाल एनक्लेव, राजौरी गार्डन गार्डन, नई दिल्ली - 110027 के खाता संख्या -910010001264246, IFSC Code - UTIB0000066 में सीधे जमा करवा सकते हैं, इसकी सूचना आप श्री सतीश शर्मा-मो०-9310278078 पर अवश्य भेजें ताकि जमा राशि की रसीद बनाकर आपको प्रेषित कर सकें।

Paytm UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE
Accepted Here

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80-G के अंतर्गत कर मुक्त है।

पूज्य महाराजश्री के कुम्भ पर्व पर लिए 108 संस्कार केन्द्रों के संकल्प में जुड़ीं पांच और कड़ियां

भोपाल (म.प्र.), राउरकेला (उड़ीसा), बरेली (उ.प्र.), हैदराबाद (तेलंगाना), जालंधर (पंजाब) में बाल संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ

भोपाल (मध्य प्रदेश)

राउरकेला (उड़ीसा)

जालंधर (पंजाब)

बरेली (उत्तर प्रदेश)

पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. आर्चिका दीदी जी के आशीर्वाद से 108 बाल संस्कार केंद्रों की स्थापना के संकल्प के अंतर्गत 12 सितंबर, 2025 को भोपाल में 50 बच्चों को लेकर हर्षनी वेलफेयर फांउडेशन परिसर में बाल संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ हुआ। इसी श्रृंखला में 15 सितंबर, 2025 को राउरकेला (उड़ीसा) में 30 बच्चों को लेकर बाल संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ किया गया। 25 सितंबर, 2025 को बरेली के संजयनगर स्थित साई शिशु मंदिर में माननीय डॉ. अरुण कुमार जी (मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार) की अध्यक्षता में 25 बच्चों को लेकर बाल संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ किया। 26 सितम्बर, 2025 को बडी चावडी, हैदराबाद (तेलंगाना) में बाल संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ किया। 28 सितम्बर, 2025 को गवर्नमेंट गर्ल्स प्राइमरी स्कूल गढ़ा, जालंधर पंजाब में 50 बच्चों को लेकर बाल संस्कार केन्द्र का विधिवत शुभारम्भ किया गया।

इन सभी अवसरों पर केन्द्रीय अधिकारियों ने बाल संस्कार केंद्रों की भूमिका, पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति तथा इससे बच्चों और अभिभावकों को होने वाले लाभों की विस्तृत जानकारी दी। ●

कार्यालय : आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041
दूरभाष : 9560792792, 9582954200
ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org
वेबसाइट : www.vishwajagritimission.org

अपने स्वयं व अपनों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व पूर्वजों की पुण्यस्मृति में अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत यजमानों द्वारा आनन्दधाम आश्रम के गुरुकुल, वृद्धाश्रम में भोजन करवाया जाता है तथा गऊओं के लिए गौग्रास भी दिया जाता है। इस अवसर पर यजमानों के लिए मंगलकामना करते हुए आचार्यों एवं ऋषिकुमारों द्वारा प्रार्थना और यज्ञ भी किया जाता है।

इस योजना की सहयोग राशि आप सीधे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं–

"VISHWA JAGRITI MISSION" का A/c No. 916010029741912 Axis Bank, East Punjabi Bagh, New Delhi-110026, IFS CODE - UTIB0002497.

भुगतान करने के लिए, पेटीएम या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें
www.vishwajagritimission.org
आनंदधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

राशि जमा कराने के उपरान्त उसकी सूचना हमें ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org व्हाट्सऐप नम्बर : 9582954200, 9560792792 पर अवश्य भेजें,ताकि जमा की गई राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक से अधिक तिथियाँ आरक्षित कराने के लिए उपरोक्त ई-मेल आई.डी. पर सूचित करें।
(आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है)

श्रद्धापर्व पर विश्व जागृति मिशन द्वारा भारत की महान विभूतियों का सम्मान

राष्ट्र और सनातन संस्कृति को बचाने के लिए बच्चों को अच्छे संस्कार दें - सुधांशु जी महाराज

आनन्दधाम, नई दिल्ली। पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में माता-पिता एवं वृद्ध विष्ठिजनों के सम्मान में आयोजित श्रद्धापर्व महोत्सव 2 अक्टूबर, 2025 को आनंदधाम आश्रम, नई दिल्ली में हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज, ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी एवं पूज्य संत मणिराम दास जी महाराज के कर कमलों से दीप प्रज्जवलन से हुआ। इस अवसर पर वृद्धाश्रम के संबंध में श्रीमती कविता किरण द्वारा प्रस्तुत कविता ने सभी को भावुक किया।

श्रद्धापर्व महोत्सव पर पधारे हुए देश के ख्याति प्राप्त विशिष्टजनों का अभिनंदन करते हुए व्यास मंच से पूज्य गुरुवर श्री सुधांशु जी महाराज ने कहा कि हम गौरवान्वित हैं कि भारत भूमि के रत्न यहां विराजमान हैं, जिस तरह से माता-पिता अपने उपकारों से संतान के लिए पूजनीय होते हैं उसी तरह से इन विशिष्टजनों का मानव समाज पर उपकार हैं इसलिए ये समाज के लिए वंदनीय हैं, इन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में देश का मान बढ़ाया है, मैं सभी का हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करता हूं। उन्होंने कहा माता-पिता अपने ही घरों में अपने बच्चों से उपेक्षित न हों उनकी सेवा की जाए। राम कृष्ण की संस्कृति चलाई जाए, बच्चे हमारी सनातन संस्कृति और संस्कारों से जुड़ें। श्रद्धापर्व तो तब से शुरू था जब भगवान गणपति ने अपने माता-पिता की सेवा कर देवताओं में अग्रपूजा का अधिकार प्राप्त किया। श्रद्धापर्व का शुभारम्भ तो तब से ही था। माता-पिता के प्रति पूजनीय भाव की पुनर्स्थापना के लिए हम वर्ष 1997 से श्रद्धापर्व मना रहे हैं। बच्चे अपने माँ-बाप से भावनाओं से जुड़ें। उनका सम्मान करें, उन्हें समय दें, उनके पास बैठें। कोई नया कार्य शुरू करने से पहले उनका आदेश- आशीर्वाद लें, जिससे उन्हें यह एहसास हो कि उनकी बात आज भी घर में मानी जाती है।

महाराजश्री ने बढ़ते वृद्धाश्रमों पर प्रहार करते हुए कहा अगर अस्पताल बढ़ रहे हैं तो मतलब रोगी बढ़े हैं और यदि वृद्धाश्रम बढ़े हैं तो समाज में पीड़ा है। समाज की पीड़ा कम करने के लिए हमें जनरेशन गैप खत्म करना होगा। विश्व जागृति मिशन आज जहां श्रद्धापर्व मना रहा है वहीं आज विजयदशमी का पर्व, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती है, हम इन महापुरुषों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

पूज्य महाराजश्री ने कहा कि अपने अंदर की अच्छाई की ज्योति को कभी न बुझने दें। उन्होंने जोश और समर्पण के साथ राष्ट्र और सनातन संस्कृति को बचाने के लिए कर्म करते रहने का आह्वान किया। देश के लिए अपना बलिदान देने वाले बलिदानियों का उल्लेख करते हुए उन्हें नमन किया और आज के दिवस को उनके प्रति कृतज्ञता व सम्मान का दिवस बताया।

इस सम्मान समारोह में मुनिराम दास महाराज (सेवा सुरभि सम्मान), झज्जर जिले की आइपीएस डॉ. राजश्री सिंह (नारी रत्न सम्मान), पद्मश्री गुरविंदर सिंह (सेवा सुरभि सम्मान), डा. मधु भट्ट तैलंग (नारी गौरव सम्मान), कृषि विज्ञानी पद्मश्री डा. सुरिंद्र कुमार वासल (कृषि विज्ञान गौरव सम्मान), प्रोफेसर श्री भरत गुप्त जी (विशिष्ट कलाकार सम्मान) और पद्मश्री राधा भट्ट (सेवा सुरभि सम्मान) को उनके समाज में अद्वितीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मिशन की उपाध्यक्ष डा. अर्चिका सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ज्ञात हो कि श्रद्धापर्व के उपलक्ष्य में देशभर के बच्चों में अच्छे संस्कार और उनकी प्रतिभा विकास के लिए आनन्दधाम ट्रस्ट द्वारा माता-पिता, दादा-दानी एवं नाना-नारी पर निबंध, कविता, श्लोगन, वीडियो आदि ऑनलाईन प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। इन प्रतियोगिताओं में सहभागी एवं विजेता छात्र-छात्राओं को 2 अक्टूबर, 2025 को आनन्दधाम आश्रम में पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर डॉ. अर्चिका दीदी ने कहा-माता-पिता दादा-दादी, नाना-नानी का आशीर्वाद हर संकट से पार लगा देता है, ये बड़े बुजुर्ग जीवित रहते हुए भी हमारी हर खुशी के लिए दुआ देते हैं और जीवन पूरा होने के बाद भी कृपा करते हैं तो हमें ये हमेशा ध्यान देना है कि बड़े लोगों की सेवा-सम्मान जरूर करना है। आजकल के समय में नई पीढ़ी के लिए बहुत जरूरी है कि वे अपने रिश्तों को सम्भालना सीखें। धन से ज्यादा जरूरी है रिश्तों को सम्भाल लेना, उन्हें अपना बनाये रखना। श्रद्धापर्व हमें यही सिखाता है।

इस प्रेरक पर्व पर पूज्य महाराज के उपदेश-संदेश को सुनकर भक्तजन भावविभोर हुए। भण्डारे प्रसाद के साथ कार्यक्रम का सुखद समापन हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में मिशन के महामंत्री श्री देवराज कटारीया जी के निर्देशन में कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं का सराहनीय योगदान रहा। उल्लेखनीय है कि श्रद्धापर्व महोत्सव का यह कार्यक्रम आनंदधाम आश्रम, नई दिल्ली के साथ मिशन के सभी मण्डलों में श्रद्धा से मनाया गया। यहा प्रस्तुत हैं कुछ मण्डलों की झलकियां।

महंत श्री मुनिराम दास जी महाराज

पद्मश्री श्री गुरविंदर सिंह जी

पद्मश्री श्री भरत गुप्त जी

डॉ. राजश्री सिंह जी

डॉ. मधु भट्ट तैलंग जी

पद्मश्री डॉ. सुरिन्द्र कुमार वासल जी

आनन्दधाम वृद्धाश्रम, नई दिल्ली

वर्धमान

बरेली

अहमदाबाद

विश्व जागृति मिशन (रजि०) के लिए श्री देवराज कटारीया द्वारा समाचार पत्र "धर्मदूत" ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015 से प्रकाशित एवं पुष्पक प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित। ग्रॉफिक डिजाइनिंग : सीता फाईन आर्ट्स प्रा० लि०, नई दिल्ली। सम्पादक : डॉ. नरेन्द्र मदान